

**Viro Svmmē Reverendo Atqve Excellentissimo, Domino Ioanni Gottlob
Carpzovio, SS. Theol. Doct. Prof. Pvbl. ... Praesvlis Lvbecensis Mvnvs Ipso
Inavgvrationis Die D. XXV. Dec. Ann. Ivbil. MDCCXXX. Observantissime
Gratvlantvr Et Tanto Viro Debitvm Officivm Praestare Stvdent Qvidam Gymnasii
Lvbecensis Cives**

Lvbecae: Typis Io. Nic. Greenii, [1730]

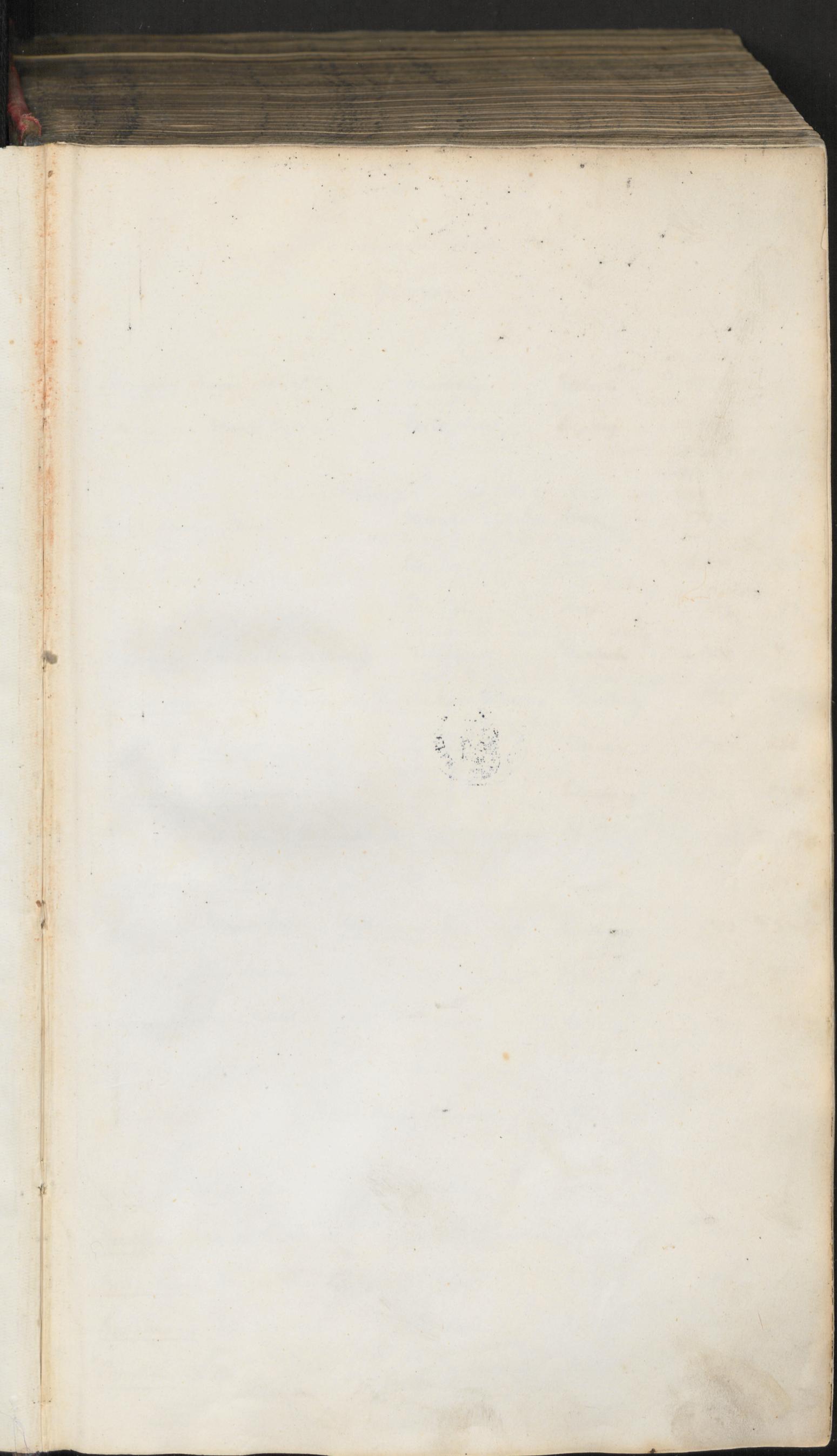
<http://purl.uni-rostock.de/rosdok/ppn1759158895>

Druck Freier  Zugang





.0675
1100 = 4°



[Faint, illegible handwritten text, possibly bleed-through from the reverse side of the page.]

[Faint, illegible handwritten text in the bottom right corner.]

Alphabetischer Index

der Gelehrten.

| | | | 92. | |
|---|------------------------|-----------|---------|--|
| <u>Aepinus</u> Franz Albert | Geburtsdag | Rostock | 1724. | 17. |
| <u>Avenarius</u> Johann Christian | Doctor philos. | Leipzig | 1708. | 82.83. 85.86.89.92.121. 122.124.125.130. 133. |
| <u>Baier</u> Johann David | Adjunct der phil. Fac. | Jena | 1709. | 115. |
| <u>Beck</u> Caspar Achatius | Lic. jur. | Jena | 1709. | 123. |
| " " " | Dr. jur. | Jena | 1709. | 93. |
| (<u>Bellowsky</u> Emerich Leopold Mar.) | Lobgedicht | Durlach | a 1730. | 41. |
| <u>Berendhausen</u> Johann Dietrich & <u>Kueste</u> Marie Catherina | | Hamburg | 1727 | 295. |
| <u>Berg</u> & <u>Köckert</u> | Hochzeit | Nismar | 1727 | 286 |
| <u>Bergner</u> & <u>Koltmann</u> | " | Lüneburg | 1715 | 249 |
| <u>Biele</u> Georg Heinrich & <u>Dohnsen</u> Margaritha Magdalene | | Lüneburg | 1705. | 185-193. |
| <u>Blochwitz</u> & <u>Wöllhaf</u> | Hochzeit | Nürnberg | 1728. | 57. |
| <u>Boye</u> (Boje) Johann Jacob & <u>Kollemann</u> Anna Maria | | Lüneburg | 1703. | 71.163-172. |
| <u>Bötticher</u> Julius Andreas | Rector Academiae | Helmstädt | 1707. | 110. |
| <u>Böttiger</u> Abraham Gottlob | Dr. philos. | Leipzig | 1707. | 77.78. (-94) |
| <u>Brincken</u> Johann Jacob | Rector | Lüneburg | 1724. | 246. |
| " " & <u>Kraut</u> Anna Margaretha | | Helmstädt | 1731. | 42. 294. |
| <u>Brückner</u> Wilhelm Hieron. | Geburtsdag | Jena | 1709. | 103. |
| <u>Buddeus</u> Johann Franz | Prorektor Academiae | Jena | 1708. | 106 |
| <u>Burgmann</u> Johann Christian | Dr. theol. | Rostock | 1726. | 280. |
| <u>Burgmann</u> Peter Christoph | Dr. med. | Rostock | 1726 | 20 |
| * <u>Carmon</u> Jacob | Rector Academiae | Rostock | 1728. | 18.19.43. 59.60. |

| | | | | |
|---|--------------------------|---------------|-------|----------------|
| <u>Carpzov</u> Johann Gottlob | Superintendent | Lübeck | 1730 | 9-11. |
| <u>Christiani</u> Elisabeth Dorothea | Beerdigung | Kiel | 1727. | 291. |
| <u>Coordes</u> Johann & <u>Rathgen</u> Eleonora Magdalena | | Lüneburg | 1727. | 243-244. |
| <u>Crull</u> Christian | Pastor | Rostock | 1728 | 22-27. |
| <u>Dannenberg</u> Johann Hinrich & Anna Dorothea <u>Kohrs</u> | | Lüneburg | 1726. | 270. |
| <u>Danz</u> Johann Andreas | Dr. theol. | Jena | 1710. | 127. 132. 139. |
| <u>Dassel</u> Georg David von & <u>Döring</u> Margaretha Dorothea | | Lüneburg | 1707. | 218-220. |
| * <u>Degner</u> Nicolaus und * <u>Brandt</u> Abel Isabeth, w. Schroeder | | Cavelstorf | 1726. | 274. 283. |
| <u>Detharding</u> Georg Wilhelm | Dr. jur. | Rostock | 1727. | 62. 64. |
| <u>Diestler</u> Anna Klara, geb. Hinrichsen | Geburtstag | o. O. | 1727. | 231. |
| <u>Dornkrell</u> Heinrich Georg & <u>Johansen</u> Elisabeth Margaretha | | Lüneburg | 1705. | 194-200. |
| <u>Dorothea</u> Luise Herzogin zu Schleswig-Holstein | Namensfest | (Gülichstadt) | 1715. | 67. |
| * <u>Dürfeld</u> Johann Jacob & <u>Lüdersen</u> Magdalena Gustava | | Rostock | 1728. | 236. |
| <u>Eckardt</u> Michael & <u>Röberin</u> Anna Helena | | Weissenfels | 1699. | 201-204. |
| <u>Ellendorff</u> Joh. Christophorus | Dr. med. | Helmstädt | 1731. | 48. |
| <u>Evers</u> Joachim Dietrich & <u>Fabrice</u> Catharina Dorothea | | Hamburg | 1723. | 311. |
| * <u>Eyllers</u> Christoph. Heinrich | Magister | Rostock | 1728 | 272. |
| <u>Fabicius</u> Andreas Samuel | Magister | Wittenberg | 1711. | 152. |
| " Johann Christian | Dr. med. | " | 1717 | 160. 161. |
| <u>Fanter</u> & von <u>Gehrn</u> | Hochzeit | Rostock | 17.. | 287. |
| <u>Feustking</u> Joh. Heinrich | Oberklopprediger (Sotha) | Wittenberg | 1712. | 149. |
| <u>Fidler</u> & <u>Crüger</u> | Hochzeit | Bützow | 1728. | 275. |
| <u>Finx</u> Friedrich Anton & <u>Röse</u> Susanne Magdalena | | Jena | 1709. | 252. |
| <u>Flor</u> Johann Georg & Catharina Gertrud <u>Soltan</u> | | Lüneburg | 1705. | 209-212. |
| <u>Freudenreich</u> Abraham | Bürgermeister regens | Jena | 1707 | 99. |
| _____ | Geburtstag | Jena | 1708 | 98. |
| _____ | Rathsherr | Jena | 1709 | 100. |

| | | | | |
|--|------------------|-----------------|-----------|-------------------|
| <u>Freygang</u> Johann Gottlob | D. philos. | Leipzig | 1707. | 78 (= 94). |
| <u>Friedrich I.</u> , König von Preussen & <u>Sophie Luise</u> von Mecklenburg | | Berlin | 1708. | 36. 162. |
| <u>Friedrich I.</u> , König von Schweden u. <u>Peter Czar</u> von Russland | | Friedr. Nystedt | 1722. | 28. |
| | | 1721 | Greiswald | |
| <u>Friedrich Ludwig</u> Prinz von Oranien | Geburt | (Jena) | 1707. | 126. |
| <u>Georg II.</u> , König von Gross-Britannien | Besuch | Celle | 1729 | 21. 52. |
| " | Truppenrevue | Hannover | 1729 | 29. |
| " | - | - | ca 1729. | 30. |
| " | Besuch | Lüneburg | 1718. | 32. 58. 65. |
| <u>Gerdes</u> Frider. | Magister | Rostock | 1728. | 272. |
| (<u>Gläser</u> Thomas) | Bittschrift an ? | ? | ? | 306 |
| <u>Gödtgen</u> & <u>Pirau</u> | Hochzeit | Lüneburg | 1697 | 205. |
| <u>Götze</u> Georg Heinrich | Beerdigung | Wittenberg | 1728. | 12. |
| <u>Günther</u> Johann Caspar | D. theol. | Jena | 1726. | 14. |
| <u>Hansen</u> & <u>Craul</u> | Hochzeit | Glückstadt | 1727. | 242. 245. |
| <u>Harms</u> Hans Hinrich & <u>Harmsen</u> Rahel Sophie | | Lüneburg | 1723. | 323. |
| <u>Hasenmüller</u> Veit Heinrich | D. philos. | Jena | 1707. | 75. 117. 128. |
| <u>Haukohl</u> & <u>Schwasmann</u> | Hochzeit | Bützow | 1727. | 229. 276. |
| <u>Helbergen</u> Mlle. | Abendmusik | o. o. | o. J. | 150. |
| <u>Helmich</u> Joachim Dieterich & <u>Friexen</u> Catharina Maria | | Rostock | 1724. | 281. |
| <u>Hempel</u> & <u>Sittig</u> | Hochzeit | Dörsenborg | 1727 | 4. |
| <u>Hinsch</u> Nicolas & <u>Faber</u> Anna | " | Hamburg | 1724. | 273. |
| <u>Höfer</u> Adam Christopher | Magister philos. | Greiswald | 1726 | 230. 285. |
| <u>Hülsemann</u> Martin Georg & <u>Hedemann</u> Rahel Ursula | | Lüneburg | 1723 | 225. 226. 227. |
| <u>Jauch</u> Christian, der Ältere & <u>Dorothea</u> geb. Hoier, verw. Benckendorff. | | Lüneburg | 1703. | 214. |
| ——— Johann Christophorus | Superintendent | " | 1714 | 69. 70. 95. |
| ——— Ludolf Friedrich | Prediger | " | 1730. | 45. |

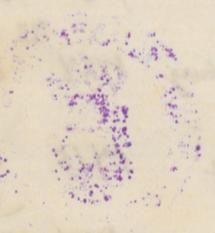
| | | | |
|--|-------------------------------------|-------------|---|
| <u>Toch Johann Georg & Freudenreich Charlotte Wilhelmine</u> | Jena | 1706 | 73. 259. |
| _____ | Dr. theol. | Jena | 1709 |
| _____ | Superintendent | Dortmund | 1709 |
| | | | 88. 107. 108. 116. 119. 120. 131. 101. 102. 104(=118). 109. |
| <u>Johann Georg Herzog zu Sachsen Geburtstag</u> | Weissenfels | 1709 (Jena) | 261. |
| <u>Jubilaeum der Universität Leipzig</u> | Leipzig | 1709 | 90. |
| <u>Jubilaeum der Reformation</u> | Wittenberg | 1717 | 146. 147. |
| <u>Jubilaeum der Augsburgischen Confession</u> | Kiel | 1730 | 39. 40. 46. |
| * <u>Karl Leopold Herzog zu Mecklenburg Geburtstag</u> | Univ. Rostock | 1726. | 16. 25. |
| <u>Kettner Ernst Friedrich</u> | Doctor | Jena | 1709 |
| <u>Kirchhoff Albert Christian</u> | Praepositus | Freese | 1715 |
| <u>Klug Johann Georg</u> | Reise von Wittenberg nach Helmstädt | o. J. | 151. |
| <u>Koltemann & Biel</u> | Hochzeit | Lüneburg | 1725 |
| _____ Friedrich Georg | zum Gedächtnis | Lüneburg | 1711 |
| _____ Hieronymus & Meister Maria | s. l. | | 1672 |
| _____ & <u>Buckisch Magdalena</u> | Lüneburg | 1692 | 96. 183. 184. |
| _____ Johann & <u>Winkelher Dorothea Elisabeth</u> | Lüneburg | 1689 | 175. |
| <u>Köppen Nicolaus</u> | Rector Academiae | Greifswald | 1723 |
| <u>Kraut Friedrich Anton</u> | Connector | Lüneburg | 1729. |
| _____ Ludolph Daniel & <u>Raphel Anna Maria</u> | " | | 1728 |
| _____ Paulus | Rector | " | 1702 |
| <u>Krüger Theodor</u> | Heimkehr v. d. Univ. | Wittenberg | 1718 |
| <u>Krüger & Ottensen</u> | Hochzeit | Danneberg | 1731 |
| <u>Kunad Andreas</u> | Superintendent: Ansbey | Leipzig | 1708 |
| <u>Laurentius Christian Gottbold</u> | Dr. philos. | Leipzig | 1712 |
| <u>Leipzig (Hart)</u> | Neujahr | Leipzig | 1715 |

| | | | | |
|--|------------------------|------------|-------------|---------------------------------|
| <u>Lemker</u> Heinrich Christian | Corrector | Lüneburg | 1729 | 31. |
| _____ & <u>Boye</u> Anna Elisabeth | | " | 1730 | 53-56. |
| <u>Lent</u> & <u>Thiele</u> | Hochzeit | Wittenberg | 1701 | 215. |
| <u>Liebius</u> Christian Sigismund & <u>Nicander</u> Edmutha Agnes | | Eisenach | 1723 | 97. |
| <u>Lüneburg</u> (Hert) | Lernade | Lüneburg | 1722 | 158. |
| <u>Lyser</u> Polycarp | Professor Helmstädt | Wittenberg | 1718 | 156. 157. |
| * <u>Märck</u> Nicolaus Jacob & * <u>Westphalen</u> Regina Sophia | | Scherwin | 1724 | 261-269. |
| <u>Margraff</u> Michael Lebgott | Magister | Leipzig | 1708 | 130 |
| <u>Mehner</u> David | Magister | Leipzig | 1708 | 130. |
| <u>Martini</u> Johann Christian | Hausbau | " | 1728 | 38. |
| <u>Mayer</u> Johann Abraham & <u>Baltzer</u> Barbara Cather. Gipsmalt | | | 1711. | 34. |
| <u>Meier</u> Hinrich & <u>Meinin</u> Maria Catherina | | Hamburg | 1721. | 247. |
| (<u>Meyer</u> Christian.) | Glaubensbekenntnis | Lüneburg | Hamb. 1718. | 141. |
| <u>Milisch</u> Christian Friedrich | Dr. philos. | Leipzig | 1707 | 77. |
| <u>Moeller</u> Jacob Valentin | Dr. med. | Rostock | 1726 | 20. |
| _____ & <u>Mitelsen</u> Anna Margaretha | | " | 1728 | 278. 279. |
| * <u>Moeller</u> Johann Peter | Dr. jur. | " | 1727 | 284. 23. 24. 26. |
| _____ & * <u>Westphalen</u> Anna Christiana | | " | 1728 | 61. 63. 235. 277. |
| <u>Movers</u> Peter Johann & <u>Edingin</u> Sara Magdalena | | Hamburg | 1723 | 314. 315. 316-319. |
| <u>Müller</u> Johann Heinrich & <u>Hennings</u> Magdalena | | Lüneburg | 1705. | 216. 217. |
| <u>Nack</u> & <u>Främb</u> | Hochzeit | " | 1722 | 305. 310. |
| <u>Neumeister</u> Erdmann | Pastor | Hamburg | 1715 | 68. 138. |
| _____ & <u>Kluge</u> Ernestina Mariamne | | s. l. | 1731. | 296. |
| <u>Niemann</u> Christian Albert & <u>Koltemann</u> Maria Elisabeth | | Glückstadt | 1712 | 254-258. 324. 325. 326. |
| <u>Nottelmann</u> Bernh. Arnold. | Neujahr | Lüneburg | 1705 | 290. |
| <u>Olde</u> Johann & <u>Richel</u> Margaretha geb. <u>Marburgin</u> von <u>Lentzen</u> (Rostock) | | | 1702. | 213. |
| <u>Orschatz</u> & <u>Rehse</u> | Hochzeit | Lüneburg | 1722 | 223-240. 224-241. |

| | | | | |
|---|-------------------------|-------------------|-------|--------------------------------|
| <u>Natin Peter</u> | Dr. med. | Rostock | 1726 | 20 |
| * <u>Plessen Joh. Christoph. von</u> & * <u>Plessen Leonora Dorothea von</u> | | Cambs | 1727 | 228. 271. |
| <u>Pipping & Seligmann</u> | Hochzeit | Leipzig | 1700 | 178. 179. |
| <u>Raphel Georg</u> & * <u>Neubaurin Elisabeth Sophia</u> | | Rostock | 1703 | 180. 181. |
| _____ | Superintendent | Lüneburg | 1715 | 143. 144. |
| <u>Reuter & Schwabe</u> | Hochzeit | Rostock | 1727 | 282. |
| <u>Rhodomann Christoph. Herm.</u> | Reimkehr v.d. Univ. | Wittenberg | 1721 | 136. |
| <u>Rothe Gottlob Wohlgenuth</u> & <u>Christiana geb. Försterin</u> verw. <u>Hösing</u> | | Goerlitz | 1721. | 250. |
| <u>Rus J. Reinhard</u> | Adjunct der philo. Fac. | Jena | 1708 | 129. |
| <u>Saull (Saulius) Georg Barthold</u> & <u>Römer Anna Catherina</u> | | Lüneburg | 1721 | 49-145. 303. |
| * <u>Schaeffer Johann Ludolph</u> | Dr. med. | Rostock | 1726 | 20. |
| <u>Scharbau Heinrich</u> | Dr. philos. | Jena | 1710 | 87. |
| <u>Schmid Christian Friedrich</u> | Neujahr | Lüneburg | 1730 | 44. |
| <u>Schmidt Jacob</u> & <u>Flagedorn Margaretha Elisabeth</u> | | Lübeck | 1726 | 238. |
| <u>Schrader Christoph</u> | Magister | Leipzig | 1708 | 130. |
| <u>Schröder & Scharpenberg</u> | Hochzeit | Hamburg | 1721 | 304. |
| <u>Schröder Hinrich</u> & <u>Rhode Catherina Christina</u> | | Rostock | 1727 | 233. 234. 237. |
| <u>Schultze Christoph. Gottlob</u> | Dr. philos. | Leipzig | 1707 | 74. 77. 78(94). 79. 80. 81. |
| <u>Schütze Otto Friedrich</u> & <u>Koltemann Sophia Catherina</u> | | Lüneburg | 1721. | 13. 289 - 313. 312. |
| <u>Seelen Johann Heinrich von</u> | Serenata | Lübeck | 1723 | 15. |
| <u>Seyffart Achatius</u> | Dr. philos. | Jena | 1710 | 84. iii. 134. |
| <u>Sivers Heinrich Jacob</u> | Magister | Rostock | 1728 | 272. |
| (<u>Stauffer Johann Georg</u> , Irrgarten Päpstlicher Lehre) | | o.O. | o.J. | 51. |
| <u>Steigenthal Christian Friedrich</u> & <u>Enckhusen Lucia Elisabeth</u> | | (Zell) Ebstorf | 1706 | 251. |
| <u>Stieglitz Christoph Ludwig</u> | Dr. philos. | Leipzig | 1707 | 77. |

| | | | | |
|--|---|-------------|-------|-----------------------------|
| <u>Stilcke</u> Johann | Magister. | Wittenberg | 1712 | 153 |
| <u>Sultzberger</u> Gottfried Christian & <u>Heimbt</u> Rosina Elisabeth | | Leipzig | 1701. | 320-22. |
| <u>Taddel</u> Christian Ludwig | Doctor | Rostock | 1729 | 47. |
| <u>Tarnow</u> & <u>Krauel</u> | Hochzeit | " | 1726 | 288. |
| <u>Taube</u> Christoph: Ernst & <u>Kaufmannin</u> Christine Juliane | | Lüneburg | 1707 | 221.222. |
| <u>Tielcke</u> Joh. Friedrich & <u>Kortholtin</u> Maria Christina | | Kiel | 1720 | 253. |
| * <u>Twitmeyer</u> Johann Heinrich | Magister | Rostock | 1728. | 272. |
| <u>Tzarstedt</u> Statius Ludolph von | Bürgermeister | Lüneburg | 1723. | 142. |
| <u>Unruh</u> & <u>Bussmann</u> | Hochzeit | Lüneburg | 1706. | 182. |
| <u>Volkmar</u> Jacob | Beerdigung | Königsberg | 1717. | 159. |
| <u>Wagner</u> Rudolf Christian | Rector Academiae | Helmsstätt | 1731. | 50. |
| <u>Wahl</u> Matthias Jacob | D. theol. | Jena | 1709. | 112-14. |
| <u>Walther</u> Bartholomäus & <u>Vollmannin</u> (Vollmann) Isabella Dorothea | | Lüneburg | 1705. | 176.177. |
| <u>Werthof</u> Mme u. Klle. | Abendmusik | o. o. | o. o. | 150 |
| <u>Wetken</u> Johann Jacob & <u>Willers</u> Anna Dina | | Hamburg | 1723. | 293. |
| <u>Wichmann</u> & <u>Chieferstein</u> | Hochzeit | Bramstede | 1718 | 298. |
| <u>Widemann</u> Georg Wolf | D. philos. | Leipzig | 1708. | 76.91.92. |
| <u>Wiesecken</u> Christoph & <u>Breuelin</u> Sophie Gottliebe | | Brandenburg | 1724 | ^{122. 130.} 307 |
| <u>Willemer</u> Christian Heinrich | Heinrichs v. d. Univ. | Wittenberg | 1715. | 154. 155. |
| <u>Zimmermann</u> Georg Joachim & <u>Biel</u> Anna Elisabeth | | Lüneburg | 1701. | 206-8. |
| <u>Zimmermann</u> & <u>Nohse</u> | Hochzeit | Rathenow | 1723. | 308-9. |
| <u>Zimmermann</u> Nicolaus Michael & <u>Margaretha</u> Elisabeth | | | | |
| | geb. <u>Lohmannin</u> , verw. <u>Radeleffen</u> | Meinersen | 1717. | 72. |
| <u>Zittau</u> | Vorbereitung zur Weihnachtszeit | Zittau | 1703. | 33. |

Faint, illegible handwritten text, likely bleed-through from the reverse side of the page. The text is arranged in approximately 20 horizontal lines.





V I R O
SVMME REVERENDO ATQVE
EXCELLENTISSIMO,
DOMINO
IOANNI GOTTLOB
CARPZOVIO,

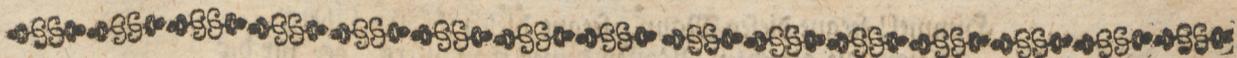
SS. THEOL. DOCT. PROF. PVBL. ET ARCHIDIACONO
 DE ACADEMIA ATQVE ECCLESIA LIPSIENSI
 IMMORTALITER MERITO,

PRAESVLIS LVBECENSIS
 MVNVS

IPSO INAUGVRATIONIS DIE
 D. XXV. DEC. ANN. IVBIL. MDCCXXX,
 OBSERVANTISSIME GRATVLANTVR

ET
 TANTO VIRO DEBITVM OFFICIVM
 PRAESTARE STVDENT

QVIDAM GYMNASII LVBECENSIS
CIVES.



L V B E C A E,
 TYPIS IO. NIC. GREENII, AMPLISS. SEN. TYPOGR.



1.
 O ist mein Carproz da, und sein beredter Mund,
 Der längstens durch Verdienst in weite Länder kund!
 So hat der Himmel mich vor andern werth geachtet,
 Die mit gestreckter Hand nach diesen Schmuck getrachtet!
 Wie voller Gnad' und Huld ist hier des Höchsten Schluß,
 Daß meine Freude nun vollkommen werden muß,
 Daß ich mein Jubel-Jahr nicht eher schliessen müsse,
 Bis ich dies theure Haupt in meinem Tempel küsse.

2.
 Wo ist mein Augustin? Laß mich den Lehrer sehn.
 Man sieht ihn voller Geist an heiliger Stelle stehn.
 Ein ungezähltes Volk in ungeheurer Menge,
 Macht in dem Heiligthum ein fürchterlich Gedränge,
 Es füllt den ganzen Saal, doch ist ein jeder still!
 Weil er mit Sittsamkeit die Rede hören will,
 Die, wie ein süßer Bach, von seinen Lippen fließet,
 Und lauter reine Lehr in unsre Herzen gießet.

3.
 Dies, und ein mehrers noch rufft heut die ganze Stadt,
 Die, grosser Mann! an DJR den andern Pfeiffet hat.
 So spricht das Heiligthum, das sich mit Lust erfreuet,
 Weil Götz und Hunnius in DJR so schön verneuet.
 So singt in Demuth auch ein treu-ergebner Knecht,
 Der, weil sein Dichter-Wis an Vorrath viel zu schlecht,
 Von Deiner Trefflichkeit ein würdig Lied zu zeigen,
 Durch Deiner Gaben Glanz erstaunt muß stille schweigen.

Zacharias David Schulemann,
 Sulza-Megapolitanus.

4.
 Jüngstens saß Eusebia ganz im schwarzen Flor verhüllet,
 Und man sah gerechte Thränen über ihre Wangen gehn.
 Jezund aber wird der Schmerz und das herbe Leyd gestillet,
 Jezund sieht man nach der Trauer lauter Freuden-Sackeln stehn.
 Jezt erscheint nach düstrem Wetter der erwünschte Sonnenschein,
 Ey wer wolte denn nicht fröhlich und von Herzen lustig seyn.

5.
 Sabe man vor kurzer Zeit eine hohe Eder fallen,
 Die in Lübeck's stolzen Mauern ein erwünschter Zierath war,
 Hörte man mit bitterm Schmerz bange Todten-Lieder schallen,
 Ey laß fahren herbes Klagen, laß die schwarze Todten-Bahr,
 (GöÙe schläft und ruht in Frieden. Schlaf Du theurer Gottes-Mann,
 Denn Dein Nahme bleibt im Seegen.) Jezt geht neu Vergnügen an.

6.
 Er hat seinen Lauff vollbrocht, seine Seele lebt in Freuden.
 Kommt ihr Kinder der Euseben, jauchzet, herzet, locket, lacht,
 Denn ein ander Gottes-Mann will euch, seine Heerde, weyden,
 Daß euch keine Wölffe schaden, ob sie gleich darauf bedacht.
 Nehmt ihn auf mit grossen Freuden, laßt die Trauer-Mantel stehn,
 Jezund wil euch nach den Thränen lauter Freud' und Bonn' umziehn.

7.
 Komm, Du treuer Gottes-Mann, unsre Thore stehen offen.
 O der angenehmen Zeitung! da es es heist: Er ist schon da.
 Ruffet, ruffet überlaut, unser Wunsch ist eingetroffen,
 Weil wir solchen Lehrer haben, dessen Wort ein Friedens-Ja.
 Der für seine Heerde wachet, sie beschützet, hebt und trägt,
 Und der Bosheit eine Kette, zwischen Naas' und Ohren legt.

8.
 Himmel! segne diesen Mann, segne diesen theuren Lehrer,
 Seegne die gerechten Waffen deines Kämpffers, der für dir
 Die bedrängte Wahrheit schützt, segne deines Ruhms Vermehrer,
 Laß ihm deine Gnade sehen, schreib an seines Hauses Thür:
 Lauter Seegen/ lauter Bonne, lauter Heil und Wohlsergehn/
 Soll in Lübeck's frohen Gassen mein geweihter Diener sehn.

Johann VerMehren/ Lubecensis.

CARPZOVIVM doctum nunc votis excipit omnis,
 Laetitias dulces quilibet vrbe mouet.
 Sacra cohors etiam testatur gaudia plausu,
 Et luctum viuunt Curia, Tempia, Schola.
 Vt TV perpetuo praestes TVA munera saluus,
 Laetitias cunctas hic simul ardor habet.
 HENRICVS ERNESTVS CRANTZ, Hofstus.

Sie spielt das holde Glück doch hier in Lübeck's Mauern?
 Wie drehet alles sich nach unsers Hergens Lust?
 Wie sieht man Gottes Huld ohn Schmerz und ohn Trauren?
 Was ist es, das so sehr erfreuet unsre Brust?
 Ist nicht ein grosser Schatz zu uns in Lübeck kommen?
 Was hat man lieblichers zu dieser Zeit vernommen?

Zwar hat die Traven-Stadt jüngst einen Mann verlohren,
 Der nur nach Gottesfurcht und Wissenschaft gestrebt,
 Den unser Lübeck hat zu seinem Wohl erkohren,
 Den Mann, woran die Welt was treffliches erlebt,
 Um welchen Lübeck sich noch bis anjetzt gekränklet,
 Daß ihn des Höchsten Hand so bald ins Grab versencket.

Doch aber schau man des Himmels weises Fügen,
 Wie es uns wiederum mit einem Mann beschencket,
 Der Wahrheits-Feinde kan mit tapfrem Muht besiegen,
 Und den der Himmel selbst zu seinem Dienst gelencket.
 Sein Lob steigt allezeit mit grossem Ruhm empor,
 Bis an der Sonnen Sitz im blauen Sternen-Chor.

Wer aber ist es wol? Wen kan man hier verstehen,
 Ist's nicht Carpzovius? der grossen Lehrer Ruhm;
 Aus Dessen Schriften man zur Gnüge kan ersehen,
 Die grosse Fähigkeit in all und jedem Thun,
 Und den man nicht besugt nach Würden abzuschildern,
 Denn Phidias gehört zu solchen grossen Bildern.

Doch weil mich ein Befehl, dem nicht zu widerstreben,
 An diesem frohen Tag auf etwas denken heisst,
 So will ich, Theurer Mann! mich nicht zu weit begeben,
 Ich finde mich zu schlecht, und meinen schwachen Geist.
 Ich will, wie billig ist, auf frohen Wunsch gedanken:
 Gott lasse alles sich zum Heil und Seegen lencken.

So wird die Traven-Stadt sich glücklich können nennen,
 So kan man reine Lehr, in allen Tempeln sehn,
 So wird der Musen-Sitz viel wackre Lehrer kennen,
 So wird die Bürgerschaft in gutem Flohre stehn.
 Drum ruff' ich zum Beschluß: Es müß Ihm nichtes fehlen,
 Er müsse Nestoris sehr lange Jahre zehlen.

Gabriel Christlieb Sifmann / Travemundanus.

Quam blande vario res, tempora, factaque voluens
 Turbine, post rabidos largiris iubila luctus?
 O rerum fatigue pater, moderator olympi!
 Atria nuper erant atris velata tenebris,
 Moeftaque ferales spirabant limina taxos:
 GOETZIVS, ast quantus vitam finiuit acerbam,
 Vir, qui multorum sincero viuit in ore,
 Quem LVBECA dolet, luget respública sancta.
 At sine felices votis arcessere manes,
 Et cineres plorare pios, mihi chara bonisque
 Patria, linque rogos: mea iam non nubila Musa
 Cantat, quæ fuerant: post planctus iubila reddit
 Ipse DEVS summus: splendet post nubila Phoebus,

Carpophorus CARPZOVIVS. Hem! nunc gaudia carpit
Omnis homo praesens, cura nec carpitur vllus.
Tempus adest non immaturos carpere fructus.
MAXIME VIR valeas, ex votis singula currant,
Aurea temporibusque Tuis fauste imperet aetas.
Antistes prudens & clarus nomine viuat.
Sic Vrbs gaudebit, bonus & laetabitur omnis.

IOANNES FRIEDLIEB FITZMANN, Trauemund.

Plaudite Pierides! Gaude dilecta TRAVANA!
Concipe laetitias prosperitate Tua!
Laetis nunc verbis reputa Tua Numinis almi
Munera! Nunc quivis gaudia magna fouet.

CARPZOVIVS Doct̃or templi penetralia lustrat,
Qualem Musa vetat Eusebiesque mori.
Numinis hic Doct̃or divinaque verba docebit,
Monstrabitque viam ad culmina celsa poli.
Quare cum grates persoluunt pectora cuncta,
Inclyte CARPZOVI, suscipe vota mea,
Vt pede inoffenso procurras tempore longo;
Namque vigore Tuo tota Lubeca viget.

PETRVS BVRGESOHN, Geualia-Suecus.

Laeta Lubeca potes nunc magnos fundere plausus,
Et vos, Pierides, fata videre bona.
Nam tandem venit CARPZOVIVS, orbis & vrbis
Qui decus est, sancti delictumque gregis.
Tu, VIR laude mea maior, super aethera note,
Fortunate annos Nestoris vsque vide!

GOTTFRIED IOACHIM NIEMANN, Lubecensis.

Odecus mundi! celebrande Praeful!
Dogmatum tutor! columenque templi
Omnibus gratum! rapit ardor omnes
TE venerandi.

Duct̃or ut quondam rediens in urbem,
Hoste prostrato, celebrat triumphos;
Sic Tuo felix aditu mouetur
Tota Lubeca.

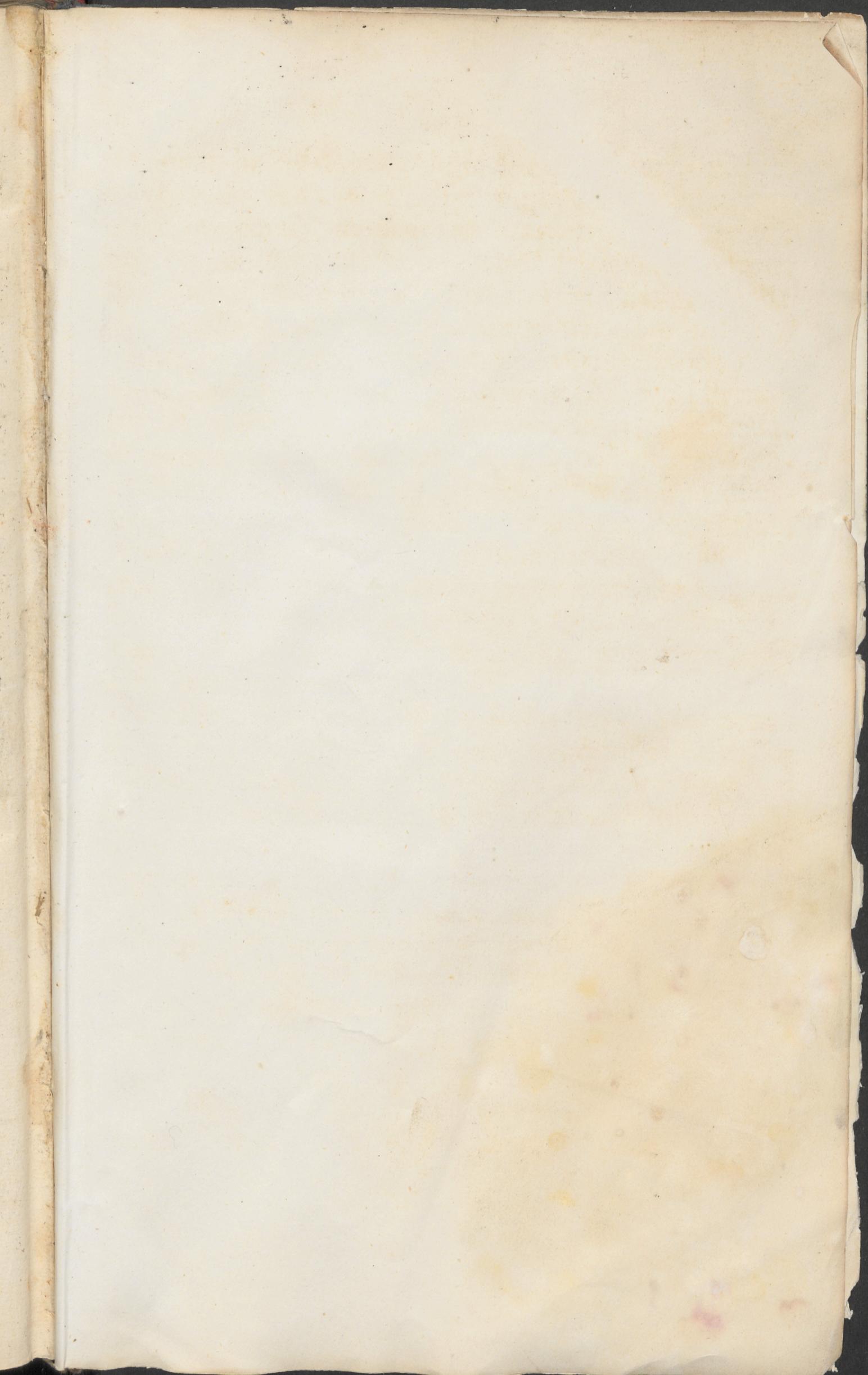
Magne CARPZOVI! sed eas Lubecae
Ordinis sancti caput, ac repletum
Per dies Templum resonet futuros
Gaudia magna.

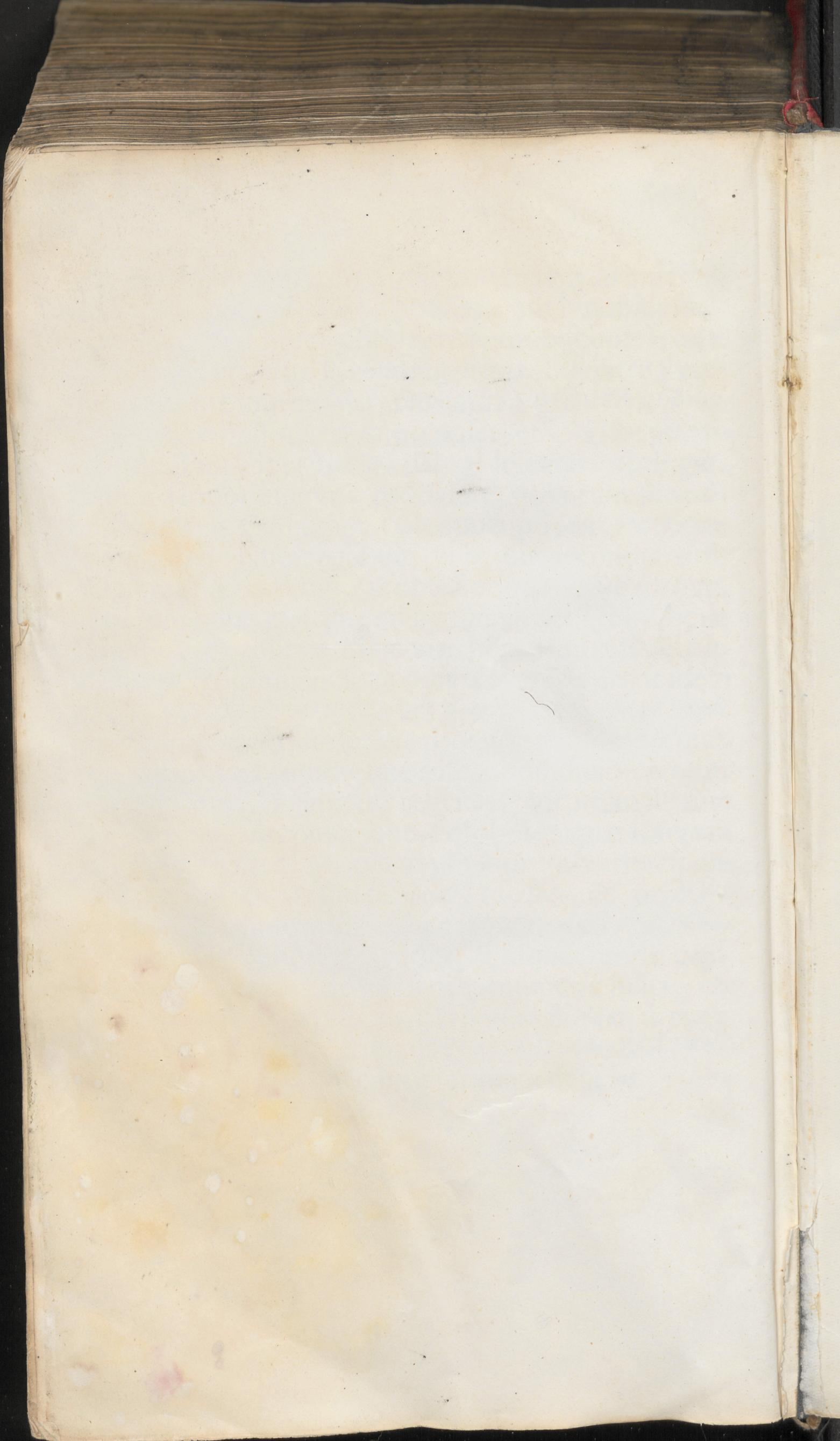
IOACHIMVS MATTHIAS LÜTKENS, Lubecensis.

Ah Lubeca vulnerata complet ora luctibus.
Arx iacet sacrata moesta, fletibus nec desinit.
GOETZIVS, qui verba pura proferebat publice,
Fata vitae dura clausit, & videt coelestia.
Tu, Lubeca, fraena pone turbidis doloribus
Iubilumque misce curis: adstat hic CARPZOVIVS.
Hic gregem defendet omnem, deferetque pabulum.
Ornat hic Scholamque nostram: magna sunt haec munera.
O Lubecae splendor ardens, proroga tu tempora,
Candidus peroptat omnis: ne repellas debita.

ACHILLES GOTTFRIED RICHTER, Lubecensis.











Carpophorus CARPZOVIVS. Hem! nunc gaudia carpit
Omnis homo praefens, cura nec carpitur vllus.
Tempus adest non immaturos carpere fructus.
MAXIME VIR valeas, ex votis singula currant,
Aurea temporibusque Tuis fauste imperet aetas.
Antistes prudens & clarus nomine viuat.
Sic Vrbs gaudebit, bonus & laetabitur omnis.

IOANNES FRIEDLIEB FITZMANN, Trauemund.

Plaudite Pierides! Gaude dilecta TRAVANA!
Concipe lactitias prosperitate Tua!
Lactis nunc verbis reputa Tua Numinis almi
Munera! Nunc quisvis gaudia magna fouet!

CARPZOVIVS Doctōr templi penetralia luſtrat,
Qualem Muſa vetat Euſebiesque mori.
Numinis hic Doctōr divinaque verba docebit,
Monſtrabitque viam ad culmina celfa poli.
Quare cum grates perſoluunt pectora cuncta,
Inclyte CARPZOVI, ſuſcipe vota mea,
Vt pede inoffenſo procurras tempore longo;
Namque vigore Tuo tota Lubeca viget.

PETRVS BVRGESOHN, Geualia-Suecus.

Laeta Lubeca potes nunc magnos fundere plauſus,
Et vos, Pierides, fata videre bona.
Nam tandem venit CARPZOVIVS, orbis & vrbis
Qui decus eſt, ſancti delictumque gregis.

Tu, VIR laude mea maior, ſuper aethera note,
Fortunate annos Neſtoris vsque vide!

GOTTFRIED IOACHIM NIEMANN, Lubecenſis.

Odecus mundi! celebrande Praeſul!
Dogmatum tutor! columenque templi
Omnibus gratum! rapit ardor omnes
TE venerandi.

Ductor ut quondam rediens in vrhem,
Hoſte proſtrato, celebrat triumphos;
Sic Tuo felix aditu mouetur
Tota Lubeca.

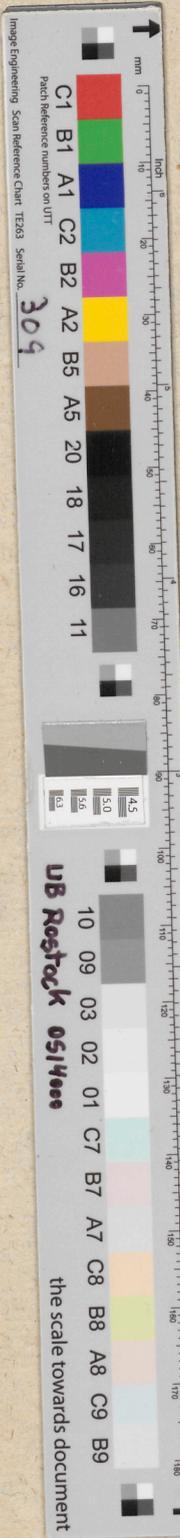
Magne CARPZOVI! ſedeas Lubecae
Ordinis ſancti caput, ac repletum
Per dies Templum reſonet futuros
Gaudia magna.

IOACHIMVS MATTHIAS LVTKENS, Lubecenſis.

Ah Lubeca vulnerata complet ora luētibus.
Arx iacet ſacrata moeſta, fietibus nec deſinit.
GOETZIVS, qui verba pura proferebat publice,
Fata vitae dura clauſit, & videt coeleſtia.

Tu, Lubeca, fraena pone turbidis doloribus
Iubilumque miſce curis: adſtat hic CARPZOVIVS.
Hic gregem defendet omnem, deſeretque pabulum.
Ornat hic Scholamque noſtram: magna ſunt haec munera.
O Lubecae ſplendor ardens, proroga tu tempora,
Candidus peroptat omnis: ne repellas debita.

ACHILLES GOTTFRIED RICHTER, Lubecenſis.



309